1. नई राह, नई मंज़िल

दीन पुर में धेनु नाम का गरीब ब्राह्मण रहता था। उसका छोटा–सा परिवार था, जिसमें उसकी पत्नी तथा दो बच्चे थे। उसकी पारिवारिक दशा इतनी दयनीय थी कि कभी–कभी उसके बच्चों को भूखा भी सोना पड़ता था। अपने बच्चों की ऐसी दशा देख ब्राह्मण–पत्नी से रहा न गया और उसने अपने पति को एक सुझाव दिया कि 'बेहतर होगा अगर आप कोई छोटा–मोटा काम शुरू करें।' ब्राह्मण को अपनी पत्नी का सुझाव पसंद आया, परन्तु अब उसकी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि बच्चों की भूख मिटाने के साथ–साथ उसे कोई नया काम शुरू करने के लिए भी पैसों की आवश्यकता थी।

जहाँ चाह, वहाँ राह तो होती ही है। धेनु की पत्नी पढ़ी–लिखी थी। उसे पैसों का इंतज़ाम करने के लिए एक उपाय सूझा। उसने अपने पति से कहा, ''मैं आपको एक श्लोक रटवाए देती हूँ। यह आप किसी भी राजा को सुनाएँगे, तो वह आपको कुछ–न–कुछ इनाम ज़रूर देगा। श्लोक भूलना नहीं।''

धेनु ने श्लोक रटते हुए अपनी मंज़िल की ओर कदम बढ़ाए। लक्ष्य इतनी सरलता से नहीं मिलता। रुकावटें चारों ओर से बाहें फैलाए इंतज़ार करती रहती हैं। वे धेनु का भी इंतज़ार कर रही थीं। उन रुकावटों ने धेनु को इस तरह जाल में जकड़ लिया कि वह यात्रा करते हुए प्रकृति के सौंदर्य में डूबकर पत्नी द्वारा रटवाया गया श्लोक भूल गया।

उसने हिम्मत नहीं हारी। अभी वह इस समस्या से उबरने का उपाय सोच ही रहा था कि उसने देखा कि एक बतख किनारे पर कुछ खोद रही है। उसके मन में एक चरण पैदा हुआ,

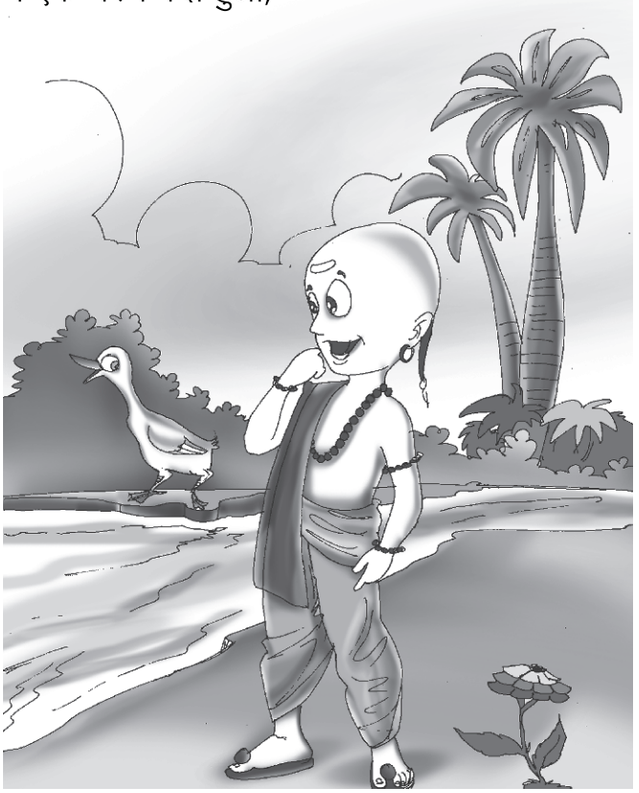

खड़बड़–खड़बड़ कुछ खोदत है

उसकी आवाज़ सुनकर बतख अपनी गरदन लंबी कर देखने लगी। तभी उसके मन में दूसरा चरण उभरा,

कर गरदन लंबी देखत है

जब दूसरी बार ब्राह्मण की आवाज़ सुनी, तो बतख मारे डर के एक शिला के पीछे दुबक गई। धेनु के मन में तीसरा चरण बना,

उकडू–मकडू वह बैठत है

इस बार ब्राह्मण की आवाज सुनकर बतख तेजी से दौड़ी और पानी में कूद पड़ी। इस दृश्य को देख कर ब्राह्मण के मन में चौथा चरण उठा,

और सरपट–सरपट दौड़त है

बतख की क्रियाओं ने उसे एक नई दिशा दी और वह अपनी मंज़िल की ओर एक बार फिर से बढ़ चला। चलते–चलते वह एक नगर में पहुँचा, जिसका नाम खुशहाल पुर था। वहाँ का राजा समझदार होने के साथ–साथ अपनी प्रजा का हितैषी भी था। अपने इन्हीं गुणों के कारण उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैली हुई थी। धेनु ने भी जब राजा का इतना नाम सुना, तो उसे इस नगर में अपनी दाल गलती नज़र आई। वह राजा के दरबार का पता पूछते हुए दरबार में पहुँचा। वहाँ उसने राजा समेत सभी दरबारियों को स्वयं रचित श्लोक सुनाया। इस विचित्र श्लोक को सुनकर सभी अचंभित थे क्योंकि इतने विद्वानों से भरे दरबार में कोई भी ऐसा नहीं था, जिसे श्लोक का अर्थ समझ में आया हो। आखिरकार राजा ने धेनु से कहा, 'पंडित जी, दो–चार दिन बाद आप फिर से पधारें। हम आपके श्लोक का जवाब अवश्य देंगे। इस दौरान आपको अपने रहने, खाने आदि के विषय में चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप हमारे मेहमान हैं। महल में जाकर विश्राम कीजिए। यदि किसी भी चीज़ की आवश्यकता महसूस हो, तो आप बेझिझक हमें बता सकते हैं।'

राजा ने अपने कमरे की दीवार पर श्लोक लिखवा लिया। उसका अर्थ जानने के लिए वह रात–रात भर जागता। एक रात की बात है, एक तरफ राजा रात के सन्नाटे में बैठा श्लोक के एक–एक चरण को बोलकर उस पर चिंतन–मनन कर रहा था, तो दूसरी तरफ महल में चार चोर सेंध लगाए बैठे थे। वे दीवार को ढहाने में मस्त थे, तभी राजा के शब्द उनके कानों से टकराए,

खड़बड़–खड़बड़ कुछ खोदत है

चोरों ने सोचा कि राजा शायद जाग रहा है। खुदाई की आवाज़ भी सुन रहा है। उनमें से एक चोर महल के झरोखे पर चढ़कर लंबी गरदन करते हुए देखने लगा कि आखिर राजा का इरादा क्या है? ठीक उसी समय राजा ने दूसरा चरण दोहराया,

कर गरदन लंबी देखत है

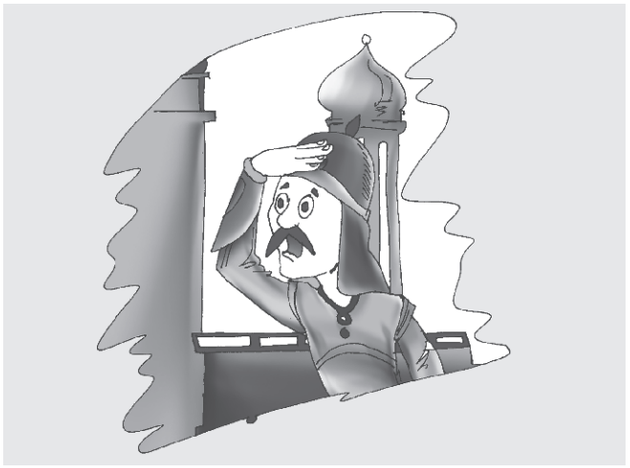

यह सुनकर उन्हें यकीन हो गया कि कम–से–कम राजा ने चोरों के सरदार को तो देख ही लिया है। वह फौरन झरोखे से कूदकर अपने साथियों के पास आया और मशवरा करने बैठ गया। तभी राजा ने तीसरा चरण दोहराया,

उकड़ू–मकड़ू वह बैठत है

यह सुनकर चोरों के हाथ–पैर फूल गए। उन्हें लगा राजा ने उन्हें देख लिया है। अब राजा सभी को गिरफ्तार करके फाँसी के फंदे पर लटका देगा। इसी डर के साथ वे वहाँ से भाग निकले। तभी राजा ने चौथा चरण दोहराया,

और सरपट–सरपट दौड़त है

वास्तव में ये चोर राजा के चौकीदार ही थे। उनकी नीयत बिगड़ गई थी। अपनी इस शर्मनाक हरकत और राजा से डर के चलते वे अपने काम पर नहीं पहुँचे। चारों चौकीदारों को अचानक काम पर न पहुँचा पाकर राजा को उनकी खैरियत की चिंता होने लगी। उसने तुरंत एक सिपाही को भेजकर उन चारों को बुलाकर लाने का फरमान निकाल दिया। कुछ देर बाद चारों राजा के सामने आकर चुपचाप खड़े हो गए। जब राजा ने उनसे छुट्टी लेने का कारण पूछा, तो वे सिर से पाँव तक काँपने लगे और जवाब देते हुए उन्होंने रात वाली घटना सही–सही सुना डाली। राजा सारी घटना सुनकर हैरान रह गया।

राजा को धेनु का श्लोक चमत्कारी प्रतीत हुआ क्योंकि वह उसके लिए कारगर सिद्ध हुआ था। उसने ब्राह्मण को दरबार में बुलवाकर एक लाख रुपया दिया। इस समय अंधा क्या चाहे दो आँखें वाली कहावत धेनु पर पूरी तरह लागू हो रही थी। तो देखा आपने किस प्रकार मेहनत, हिम्मत और लगन से कल्पना साकार होती है।